UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186423

UNIVERSAL
LIBRARY

किसान-कुसुमावली

पशुओं के रोग

लेखक

श्रीयुत 'व्यथितहृदय'

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार
२६, लाटूश रोड
लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सं० २००३ वि० [मूल्य १)

प्रकाशक
श्रीजवाहरलाल
राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल
मछुआटोली
पटना

—:*※※※*:—

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

दो शब्द

यह प्रायः सभी जानते हैं कि भारत कृषि-प्रधान देश है, और यहाँ की ७२ प्रतिशत जनता का जीवन खेती पर ही निर्भर है। किंतु खेती के अन्यान्य साधनों में बैल सर्व-प्रधान साधन हैं। उन्हें हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ रखना किसानों का परम कर्तव्य है। इस पुस्तक में बैलों के प्रायः समस्त रोग, उनके लक्षण और उनकी चिकित्सा विशद रूप से सरल भाषा में लिखी गई है। साथ ही भैंस, गाय, बकरी, घोड़ा आदि के भी रोग और चिकित्सा लिखी गई है। यह पुस्तक न केवल किसानों, प्रत्युत उन सभी गृहस्थों के लिये—जो इन पशुओं को पालते हैं—परमोपयोगी है। इसकी एक प्रति उनके पास अवश्य रहनी चाहिए। आशा है, इससे पशु पालनेवाली जनता और किसान, दोनो को लाभ होगा। आशा है, हमारी लोक-प्रिय केंद्रीय और प्रांतीय सरकारें इस पुस्तक को अपनाएँगी।

कवि-कुटीर
लखनऊ
१५।६।४६

दुलारेलाल
सावित्री दुलारेलाल

सूची-पत्र

		पृष्ठ
१. हमारे पशु	...	१
२. गाय, भैंस और बैल के रोग	.. .	६
३. घोड़े के रोग और उनकी चिकित्सा	. .	४१
४. हाथी के रोग और उनकी चिकित्सा	.	६२
५. बकरी के रोग और उनकी चिकित्सा	....	७०
६. कुत्ते के रोग और उनकी चिकित्सा	. .	७५

हमारे पशु

पशुओं से हमारा अधिक काम निकलता है। दूसरे शब्दों में, अगर पशु न हों, तो हमारा काम ही न चले। पशु मनुष्यों का अधिक पड़ोसी जीव है। उपयोगी पशु हमेशा मनुष्यों के पास रहते और उनकी सेवा में लगे रहते हैं। पशुओं में बैल, गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा, ऊँट, कुत्ता और हाथी आदि से हमारा अधिक काम चलता है। बैल से खेती होती है। तुम समझ सकते हो कि बैल हमारे देश के लिये कितने उपयोगी जीव हैं। दूसरे देशों में घोड़ा, ऊँट और खच्चरों से भी खेती की जाती है। किंतु हमारे देश में खेती का सारा काम बैलों से ही पूरा किया जाता है। गाय, भैंस, बकरी से दूध मिलता है। घोड़ा, ऊँट और हाथी आदि पशु सवारी के काम आते हैं। कुत्ता घर की रखवाली करता है। इनके अतिरिक्त और भी कुछ ऐसे उपयोगी पशु हैं, जो मनुष्यों की सेवा में लगे रहते हैं।

पशु अनबोल होते हैं। वे अपना दुख-सुख महसूस करते हुए भी उसे अपनी ज़बान से दूसरों पर प्रकट नहीं कर सकते। जो उन्हें पालता है, उसी पर वे आश्रित रहते हैं। पशुओं का मालिक ही अपने पशुओं को खाना देता है, और उनके दुख-सुख की परवा भी करता है। पशुओं से जब हमारा अधिक काम निकलता है, तब हमारा कर्तव्य है कि हम उनके दुख-सुख की परवा करें। परवा इस-लिये करें कि वे अनबोल जानवर दिन-रात हमारी सेवा में लगे रहते और हम पर आश्रित रहते हैं। इसलिये उनका ख़याल करना ही चाहिए। हमें इस बात की चिंता होनी चाहिए कि हम अपने पशुओं को किस तरह रक्खें कि वे अधिक स्वस्थ, ताक़तवर और हृष्ट-पुष्ट बने रहें। इसके लिये हमें अपने पशुओं के भोजन-पानी और रहन-सहन पर ध्यान देना चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपने पशुओं को हमेशा साफ़ भोजन और साफ़ पानी दें। जिस प्रकार हम अपने भोजन, पानी और हवा पर ध्यान देते हैं, उसी प्रकार हमें अपने पशुओं के भोजन, पानी और हवा पर भी ध्यान देना चाहिए। हमारे पशु जितने ही ताक़तवर रहेंगे, उतनी ही वे हमारी सेवा

भी कर सकेंगे। इसलिये हमारा परम कर्तव्य है कि हम उनकी तंदुरुस्ती पर ध्यान दें।

खान-पान और हवा की बुराइयों का जिस प्रकार मनुष्यों पर असर पड़ता है, उसी प्रकार पशुओं पर भी। खान-पान और हवा की गड़बड़ी से पशु भी मनुष्य की तरह बीमार पड़ जाया करते हैं, और उनके शरीर में भी नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। रोग उत्पन्न हो जाने पर मनुष्यों की भाँति पशुओं की भी चिकित्सा करनी चाहिए। जगह-जगह पशुओं की चिकित्सा के लिये सरकारी अस्पताल खुले हुए हैं, किंतु गाँवों में ऐसे अस्पतालों का पूर्ण अभाव-सा है। इसलिये गाँवों के निवासियों को पशुओं की चिकित्सा का अवश्य कुछ-न-कुछ ज्ञान होना चाहिए। हरएक किसान को बीमारियों की परख और उसके साथ ही कुछ घरेलू दवाइयाँ भी जाननी चाहिए। सरकार को भी इस काम में हाथ बँटाना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह इस ढंग का साहित्य किसानों में बाँटे कि जनता और सरकार, दोनो को मिलकर पशुओं की उचित रूप से सेवा करनी चाहिए। सेवा इसलिये करनी चाहिए कि इन दोनो का ही पशुओं से अधिक काम निकलता है।

रोग की पहचान

पशु की चिकित्सा करने के पहले यह ज़रूरी है कि उसके रोग की परख की जाय। जब तक रोग की पहचान अच्छी तरह न हो सके, तब तक कोई भी दवा काम न करेगी। इसलिये जब कोई पशु बीमार हो, तब सबसे पहले उसके रोग को जानने की कोशिश करनी चाहिए। बिना रोग की पहचान किए कभी कोई दवा न देनी चाहिए। रोग की पहचान के लिये बहुत कुछ नीचे की बातों पर ध्यान देना चाहिए। इसके बारे में हरएक रोग की पहचान अलग-अलग आगे लिखी जायगी। लेकिन आमतौर से रोगों की पहचान के बारे में नीचे-लिखी हुई बातों पर ध्यान देना चाहिए—

१. पशु पागुर करता है, या नहीं ?

२. उदासीन दिखलाई पड़ना।

३. खाना-पीना छोड़ देना।

४. बार-बार उठना-बैठना और चिल्लाना।

५. दूध न देना, या कम देना।

६. आँख और नाक से पानी गिरना।

७. रोओं का खड़ा होना।

८. पतला गोबर करना।

आम तौर से रोगी पशुओं के येही लक्षण होते हैं। जब किसी पशु में ये लक्षण प्रकट हों, तब समझ लेना चाहिए कि उसे कोई-न-कोई रोग अवश्य हुआ है। रोग प्रकट होते ही फौरन् उसकी चिकित्सा करनी चाहिए। यदि चिकित्सा उचित समय और ठीक ढंग से न की गई, तो रोग बढ़ जाने की आशंका रहती है। इसलिये फ़ौरन् किसी चतुर चिकित्सक से बीमार पशु की चिकित्सा करानी चाहिए।

गाय, भैंस और बैल के रोग

खाँसी

खाँसी बहुत बुरा रोग है। अगर खाँसी ज़्यादा दिनों तक रह गई और जड़ पकड़ गई, तो श्वास-रोग हो जाने का डर रहता है। जब पशु ज़्यादा पानी में भीगते हैं, और सर्दी-गर्मी हो जाती है, तब उन्हें खाँसी पकड़ लेती है। खाँसी पकड़ते ही फ़ौरन् उसकी चिकित्सा करनी चाहिए। क्योंकि इससे बहुत जल्द फेफड़े ख़राब हो जाने का डर रहता है। फेफड़े ख़राब हो जाने से सारी तंदुरुस्ती ही चौपट हो जाती है, और फिर जल्द अच्छे होने की आशा जाती रहती है।

पहचान—इस रोग की पहचान खाँसी का आना है। गले से घुरघुराहट की आवाज़ भी निकलती है। साँस बड़े ज़ोर से आने लगती है। ऐसा जान पड़ता है, मानो पशु हाँफ रहा है। उसका खाना-पीना और पागुर करना भी छूट जाता है।

चिकित्सा—(१) गंधक का धुआँ देना चाहिए।

(२) एक छटाँक सूखे अनार के छिलके पीसकर एक छटाँक मक्खन के साथ खिलाने से खाँसी जाती रहती है।

(३) एक तोला नौसादर, एक तोला सोंठ और एक तोला अजवाइन लो। सबको कूट-पीस-कर पाव-भर गरम पानी के साथ पिला दो। खाँसी दूर हो जायगी।

(४) एक छटाँक तारपीन का तेल और तीन छटाँक तिली का तेल लाओ। दोनो तेलों को गरम पानी के साथ मिलाकर रोगी पशु को पिला दो। खाँसी दूर हो जायगी।

(५) सूखे केले के पत्ते की राख दो तोले, मक्खन चार तोले और कच्चा दूध दस तोले, सबको मिलाकर रोगी पशु को देना चाहिए। इससे खाँसी का नाश हो जाता है।

यदि खाँसी और जुकाम एक साथ हों, तो नीचे-लिखी दवाइयाँ देनी चाहिए—

(१) अदरक के रस के साथ शहद देने से खाँसी और जुकाम जाता रहता है।

(२) एक तोला गोल मिर्च, एक तोला कबाब-चीनी, एक तोला सोंठ और एक तोला जेठी मधु।

सबको कूट-पीसकर मिलाओ, और चार तोले मिसरी के साथ दोनो वक्त खिलाओ। इससे खाँसी और जुकाम दोनो जाते रहेंगे।

बीमारी के दिनों में हलका भोजन देना चाहिए। यदि बाँस के ताज़े पत्ते मिलें, तो उन्हें देना चाहिए। सूखी घास भी दी जा सकती है। पानी गरम पिलाना चाहिए, और धूप तथा सर्दी से बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

पागुर न करना

यदि पशु पागुर करना बंद कर दे, तो समझना चाहिए कि कोई-न-कोई रोग अवश्य हुआ है। अस्वस्थ होने पर ही पशु पागुर करना बंद करते हैं। यद्यपि यह कोई ख़ास रोग नहीं है, फिर भी रोग की सूचना अवश्य देता है।

पागुर न करने पर नीचे-लिखी दवाइयाँ दी जा सकती हैं—

(१) अदरक, सोंठ, नमक और गंधक, सबको मिलाकर थोड़ा-थोड़ा देना चाहिए।

(२) अजवाइन, गोल मिर्च, नमक, सबको पीस-कर, एक साथ मिलाकर देना चाहिए।

चेचक

आदमियों की तरह जानवरों के भी चेचक निकलती है। यह बड़ा भयानक रोग है। छूत से फैलता है। जिस गाँव में यह एक पशु को पकड़ता है, फिर उस गाँव के बहुत-से जानवर इसके शिकार हो जाते हैं। इसलिये जब कभी किसी गाँव में इस रोग का आक्रमण हो, तब उचित रूप से पशुओं की देख-भाल करनी चाहिए। छूत से पशुओं को बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

पहचान—(१) रोग के प्रारंभ में पशु के थन में छोटी-छोटी फुंसियाँ और कभी-कभी गिल्टियाँ भी निकल आती हैं।

(२) पशु को बुखार हो आता है। नाक और मुँह से पानी बहने लगता है।

(३) पशु खाँसने लगता है। कान फूल आते हैं। बार-बार प्यास लगती है। पशु दाँत किट किटाता और दर्द से बेचैन हो जाता है।

(४) साँस जोरों से चलने लगती है। मल-त्याग करते समय कष्ट मालूम होता है। दाँत हिलने लगते हैं। मुख, नाक और जीभ में छोटी-छोटी अधिकांश फुंसियाँ हो आती हैं।

(५) आँख, नाक और मुख में छाले पड़ जाते हैं, और पीब बहने लगता है।

चिकित्सा—इस रोग में अक्सर पशुओं को क़ब्ज़ हो जाया करता है। जब ऐसी हालत हो, तो तीन छटाँक से छ छटाँक तक नमक देना चाहिए। दिन में दो-तीन बार गरम जल और तेल की पिचकारी भी दी जा सकती है। मगर यह ध्यान रहे कि बीमार पशु को कोई तेज़ जुलाब न दिया जाय। बहुत-से पशुओं के रक्त गिरने लगता और कफ भी जारी हो जाता है। जब रक्त और कफ का जारी होना बंद न हो, तब नीचे की कोई दवाई काम में लाई जा सकती है। इन्हें भात के माँड़ के साथ खिलाना चाहिए—

(१) सोरा बारह आना भर

(२) शराब आध पाव

(३) कपूर बारह आना-भर

इस रोग में अक्सर पशु की जीभ में सूजन हो आती और मुँह भी फूल जाता है। ऐसी दशा में कार्बोलिक एसिड और गरम जल से मुँह साफ़ कर देना चाहिए। नीम के औटे हुए पत्तों से भी मुँह और नाक की सफ़ाई करनी चाहिए। यह छूत की

बीमारी है। इसलिये जब एक जानवर को यह बीमारी हो, तब दूसरे को इससे बचाने की कोशिश करनी चाहिए। सबसे सरल उपाय यह है कि गाँव के सभी पशुओं को सुइयाँ लगवा देनी चाहिए। सुइयाँ लगवा देने से फिर इस रोग के होने का डर नहीं रहता।

नीचे-लिखी हुई दवाइयाँ भी इस रोग में दी जा सकती हैं—

(१) मिर्च का चूर्ण रुद्राक्ष के चूर्ण के साथ बासी जल में पिलाने से लाभ होता है।

(२) हल्दी एक छटाँक, करेले के पत्तों का रस आध पाव। दोनो को एक साथ बार-बार पिलाने से लाभ होता है।

(३) हल्दी, इमली के पत्ते, शियाल काँटे की जड़ और मिर्च, इन सबको पीसकर ठंडे जल के साथ पिलाने से चेचक की बीमारी दूर हो जा

(४) एक छटाँक आमला, एक छटाँक हड़ और एक छटाँक बहेड़ा लो। इन सबको दो सेर पानी में पकाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, तब उसे ठंडा करके रोगी पशु को पिला दो। इससे चेचकवाले पशु को आराम मिलता है।

(५) ८४ गोल मिर्च और बिना फूली कटेरी की जड़। दोनो को पीसकर रोगी पशु को पिलाओ। बड़ा ही लाभ होगा। रोग के पहले यदि यह दवा पिला दी जाय, तो रोग होने की संभावना ही नहीं रहती।

चेचक की अवस्था में यदि ज्वर ज़्यादा हो, तो नीचे-लिखी हुई दवाइयाँ एक साथ मिलाकर दी जा सकती हैं—

(१) सवा तोला सोरा

(२) एक छटाँक काला नमक

(३) सवा तोला गंधक

(४) आध पाव देशी शराब

(५) आग में पकाया दो सेर जल।

चेचक के रोगी पशु की अधिक देख-भाल करने की जरूरत है। उसके खाने-पीने और रहन-सहन पर अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए। इस रोग में चावल और उर्द का गाढ़ा माँड़ देना अच्छा होता है। कच्ची ताजी घास भी दी जा सकती है। माँड़ के साथ नमक भी देना जरूरी है। इस रोग में भारी पदार्थ कभी खाने को न देना चाहिए। इससे रोगी पशु के पेट में पीड़ा होने लगती है, और उसकी मृत्यु तक हो जाती है। रोगी को साफ़ जगह में रखना चाहिए।

उसके मुख और जीभ की भी सफ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। जहाँ तक हो सके, रोगी पशु को खुली जगह में रखना चाहिए।

पेट फूलना

इसे अफरा रोग भी कहते हैं। जब कोई पशु गंदी चीज खा लेता है, अथवा गंदा पानी पी लेता है, या अधिक खा लेता है, तब यह रोग उसे हो जाता है।

पहचान—(१) बाईं ओर का पेट फूल आता है।

(२) शरीर लाल हो जाता है, दस्त बंद हो जाता है और पुतली की ओर देखने से ऐसा मालूम होता है, मानो वह बाहर की ओर निकली पड़ रही है।

(३) पशु नाक ऊपर की ओर करके साँस लेता है। हाँफता है, और उसके मुख से गों-गों की आवाज़ निकलती है।

(४) एक करवट नहीं रहता। कभी उठता है, कभी बैठता है। साँस लेने में भी उसे कष्ट मालूम होता है।

(५) दाँत कटकटाता है।

चिकित्सा—(१) गर्म पानी में कंबल भिगोकर गरम-गरम सेक करने से रोगी को लाभ होता है।

(२) आध पाव राई पीसकर गरम पानी में पिलाने से फ़ायदा होता है।

(३) रोगी पशु की दोनों कोखों पर मलने से भी फ़ायदा होता है।

(४) एक सेर अलसी का तेल, आधी छटाँक तारपीन का तेल, आधी छटाँक अदरक, एक चम्मच कार्बोलिक एसिड। सबको मिलाकर पिलाने से रोग दूर हो जाता है।

(५) आध पाव देशी शराब, पाव छटाँक सोंठ का चूर्ण, पाव छटाँक गोल मिर्च, डेढ़ छटाँक गुड़ और देशी शराब एक छटाँक। इन सब चीज़ों को दो सेर पानी में मिलाओ, और गरम करके रोगी पशु को पिलाओ, अवश्य लाभ होगा।

(६) रोगी पशु के पेट पर सरसों और तारपीन का तेल मिलाकर उसकी मालिश करो।

इस रोग में रोगी पशु के खाने पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। उसे हलका भोजन देना चाहिए। हरी दूब और पतला माँड़ देना बहुत ही ठीक होगा। ठंडा पानी न देना चाहिए। जब जल देने की ज़रूरत हो, तब कुछ गरम पानी दिया जा सकता है। खाने के लिये तीसी का पतला माँड़ भी

देना चाहिए। रोगी पशु की नाक और मुँह साफ़ करते रहना चाहिए। इस रोग में सेक अधिक फ़ायदा करता है। यदि रोगी पशु के पेट में बार-बार सेंक दी जाय, तो विशेष लाभ हो सकता है।

गरगटी

इसे जहरबाद, डकहा और पसीजा भी कहते हैं। यह गले और मुख का रोग है। इसमें पशु के गले और मुख में घाव हो जाता है। साथ ही वह ज्वर का शिकार भी हो जाता है। उसे साँस लेने और पानी पीने में बड़ी तकलीफ़ मालूम होती है।

पहचान—(१) ज्वर होता है, और मुख, कान तथा गला सूज आता है। कुछ-कुछ दर्द भी होने लगता है।

(२) गले से घुर्र-घुर्र की आवाज निकलती है।

(३) जीभ बाहर निकल आती है, और मुँह बदबू से भर जाता तथा उसमें घाव हो जाता है।

(४) नाक का भीतरी हिस्सा लाल हो जाता है। आँखों की पलकों में भी ललाई दौड़ जाती है।

चिकित्सा—इस रोग में अक्सर यह देखा जाता है कि पशु का गला रुक जाता है, और साँस लेने में बहुत

ज़्यादा तकलीफ़ होने लगती है। इसके लिये पशु को जुलाब देना चाहिए। जुलाब से उसकी ये तकलीफ़ें कम हो जायँगी। जुलाब के अतिरिक्त नीचे-लिखी हुई दवाइयाँ भी दी जा सकती हैं—

(१) एक तोला फिटकरी और थोड़ा-सा गुड़, इन दोनो में पानी मिलाकर एक घोल तैयार करना चाहिए, और उससे रोगी पशु का मुख धोना चाहिए।

(२) कपूर बारह आना-भर, धतूरे के बीज का चूर्ण ६ आना-भर और शराब आध पाव। इन सबी चीज़ों को भात के माँड़ में मिलाकर रोगी पशु को पिलाओ। अवश्य आराम होगा।

(३) तीसी का तेल आध पाव और जमाल-गोटे का तेल पाव छटाँक, इन्हें एक में मिलाकर रोगी के जबड़े और गले में मलो। अवश्य फ़ायदा होगा।

(४) साढ़े चार माशे फिटकरी, दो छटाँक राब। दोनों को आध सेर पानी में मिलाओ, और उससे रोगी पशु का मुँह धोओ। फ़ायदा होगा।

(५) डेढ़ तोला जमालगोटा, दो छटाँक कड़ुवा तेल। दोनो को पकाकर दागे हुए स्थान पर मलो। इस रोग में एक कान के पास से दूसरे कान के पास तक, गले के ऊपर और जबड़े के नीचे गरम लोहे से

पशु को तीन-चार बार दागना चाहिए। दागने से छाले पड़ जाते हैं। अगर छाले पड़ गए हों, तो ऊपर भी दवा लगाओ, आराम हो जायगा।

(६) एक भाग कपूर, चौथाई भाग तार्पी का तेल, चार भाग सरसों का तेल। सबको एक दिल करके घाव पर लगाओ। इससे घाव लाल हो जायगा। घाव पर तूतिया का चूर्ण डालने से बहुत जल्द अच्छा हो जाता है।

इस रोग में रोगी पशु को खाने के लिये चावल का माड़ देना चाहिए। उसमें थोड़ा-सा नमक भी डाल देना चाहिए। यह छूत की बीमारी है। इसलिये दूसरे पशुओं को इससे बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

रक्तामाशय

इसे पेचिस भी कहते हैं। यह बड़ा भयानक रोग है। इस रोग में पशु को अधिक कष्ट होता है। आँतों की झिल्लियाँ जब ख़राब हो जाती हैं, तब यह रोग पैदा होता है। इस रोग में पशु की अधिक हिफ़ाज़त करनी चाहिए। उसके खाने-पीने और रहन-सहन पर भी अधिक ध्यान देना चाहिए।

पहचान—(१) पेट में दर्द होने लगता है।

(२) दस्त के साथ आँव, पीब और रक्त गिरता है।

(३) मुँह में छाले पड़ जाते हैं। आँखें पीली हो जाती हैं। शरीर का चमड़ा भी पीला हो जाता है।

(४) आँखों से पानी गिरने लगता है। पशु खाना-पीना छोड़ देता है। पागुर नहीं करता। रोएँ खड़े हो जाते हैं, और मुँह से लार गिरने लगती है।

(५) कुछ-कुछ ज्वर भी हो आता है।

चिकित्सा—(१) आठ तोले गुड़ चौराई की जड़ के साथ पीसकर पिलाने से खूनी आँव अच्छा हो जाता है।

(२) एक तोला कबाबचीनी, एक तोला सोरे का चूर्ण, आधा तोला चंदन का तेल। इन सब चीज़ों को आपस में मिलाओ, और भात के ठंडे माड़ के साथ दिन में दो बार बीमार पशु को पिलाओ। अवश्य आराम होगा।

(३) शतमूली का काढ़ा, गिलोय का काढ़ा और तीसी का काढ़ा अथवा मेहँदी का काढ़ा। इन्हें थोड़े-थोड़े परिमाण में बीमार पशु को पिलाना चाहिए।

(४) एक पाव तीसी का तेल लाओ, और उसमें एक रुपया दो आने-भर अफ़ीम मिलाओ। इसके बाद उसे भात के माड़ के साथ बीमार पशु को

दिन में दो बार पिलाओ, आमाशय रोग अवश्य शांत हो जायगा।

(५) एक सेर भात के माड़ में बारह आने-भर अफ़ीम मिलाओ, और उसी बीमार पशु के मलद्वार में पिचकारी दो। अवश्य लाभ होगा।

(६) गरम पानी में कंबल भिगोकर पेट पर सेंक करो। इससे आमाशय-जनित पेट का दर्द दूर हो जायगा।

इस रोग में बीमार पशु को हलका भोजन देना चाहिए। पशु को खाने के लिये भात के माड़ में नमक मिलाकर देना चाहिए। तीसी भी पकाकर माड़ के साथ दी जा सकती है। हरी दूब और बाँस के पत्ते देना अधिक लाभकारी है। रक्तामाशय के रोगी पशु को हमेशा गरम कपड़े से ढँककर रखना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसे ठंढ न लगने पावे। स्वस्थ पशुओं को उससे अलग रखना चाहिए। पशुशाला को फिनाइल अथवा गरम जल से धुलवा देना चाहिए। कभी-कभी गंधक की धूनी देनी चाहिए और चूना तथा राख छिड़कनी चाहिए।

उदरामय

यह रोग बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है।

जिस प्रकार गंदे और जहरीले भोजनों के खाने से आदमी बीमार हो जाते और उन्हें पतले दस्त आने लगते हैं, उसी प्रकार ज़हरीले घास-पत्तों के खाने से पशु भी पतला गोबर करने लगते हैं। सर्दी के लगने से भी यह रोग पैदा हो जाता है। आमतौर से जाड़े के दिनों में ही यह रोग पशुओं को होता हुआ देखा जाता है।

पहचान—(१) पेट भारी रहता है।

(२) पतला गोबर होता है।

(३) पेट में पीड़ा होती है।

(४) गोबर के साथ रक्त भी गिरता है।

चिकित्सा—(१) आध सेर पानी में एक चवन्नी-भर पीसा हुआ नीलाथोथा घोलकर पिलाने से लाभ होता है।

(२) साढ़े तीन तोले पिसी हुई खरिया मिट्टी, पौन तोला ढाक का गोंद, साढ़े चार माशे अफ़ीम, और सवा तोला पिसा हुआ चिरायता। इन सभी चीज़ों को मिलाकर बीमार पशु को खिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

(३) दो आने-भर सफ़ेदा, आधी छटाक चाकमिट्टी का चूर्ण और बारह आने-भर अफ़ीम। इन सभी

चीज़ों को भात के गाढ़े माड़ के साथ दिन में दो बार पिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

(४) कच्चे बेल को जला डालो, और फिर उसे गुड़ के साथ मिलाकर रोगी पशु को खिलाओ। उदरामय-रोग जाता रहेगा।

(५) जौ के आटे में काला नमक पिसा हुआ आधी छटाक और एक तोला हीराकसीस मिलाओ। फिर उसे चार दिन तक लगातार रोगी पशु को खिलाओ। उदरामय-रोग जाता रहेगा।

(६) दो छटाक सूखे हरे बेल को आधी छटाक खरिया मिट्टी में मिलाओ। फिर उसे दो हिस्सों में बाँटकर आध सेर गाय के मट्ठे के साथ बीमार पशु को पिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

(७) एक तोला सौंफ, एक तोला अजवाइन, एक तोला इलायची और तीन तोला चिरायता। इन सभी चीज़ों को कूट-पीसकर आध सेर जौ के आटे के साथ रोगी पशु को खिलाओ। अवश्य आराम होगा।

(८) सवा तोला सोंठ, सवा तोला चिरायता, सवा तोला काली मिर्च, सवा तोला अजवाइन, और पाँच तोला नमक। इन सभी चीज़ों को दस्त बंद

होने के बाद बीमार पशु को देना चाहिए। इससे कमजोरी दूर हो जायगी और वह फिर स्वस्थ दिखाई देने लगेगा।

इस रोग में खाने-पीने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। खाने के लिये हरी-हरी दूब और भात का माड़ देना चाहिए। यदि बाँस के पत्ते दिए जायँ, तो विशेष अच्छा हो। जहाँ रोगी पशु रहे, उस स्थान को साफ और सूखा रहना चाहिए। यदि अधिक गंदगी हो गई हो, तो फिनाइल से धुलवा देना चाहिए।

शूल

यह रोग बड़ा भयानक है। इस रोग में पशु को अधिक बेचैनी होती है और वह दर्द से छट-पटाया करता है। यह रोग अधिक शीत लग जाने से पैदा होता है। कभी-कभी विदूषित भोजन और जल से भी इसकी उत्पत्ति हो जाती है। इस रोग में पशु की विशेष सावधानी से सेवा करनी चाहिए।

पहचान—(१) दाँत कड़कड़ाने लगता है।

(२) पाकस्थली फूल आती है।

(३) पशु अधिक व्याकुल और बेचैन दिखाई देता है।

(४) पशु पैर और सींग से ज़मीन अथवा दीवाल की मिट्टी कुरेदता है, और चारों पैरों को बटोर पेट की तरफ़ ले जाता है तथा उसे फुलने की कोशिश करता है।

चिकित्सा—(१) एक भाग काला नमक, चार भाग काला जीरा, दो भाग इमली और दो भाग गोल मिर्च, इन सभी चीज़ों को जमीरी नींबू के रस में मलो और डेढ़-डेढ़ तोले की गोली बनाकर बीमार पशु को खिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

(२) एक तोला मिश्री, चार तोले पटुआ के शाक के पत्ते, और एक तोला विट नोन। इन सभी चीज़ों को पीसकर दिन में दो बार रोगी पशु को खिलाओ। रोग जाता रहेगा।

(३) दो आने-भर अफ़ीम, आधा तोला हींग और आधा तोला मिरचा। इन सभी चीज़ों को दिन में दो बार गर्म पानी के साथ रोगी पशु को पिलाओ।

(४) जहाँ दर्द होता हो, उस स्थान को गरम पानी या गरम कंबल से सेकना चाहिए। शूल रोग में सेक अधिक लाभकारक सिद्ध होता है।

(५) एक तोला हींग, दो तोले भाँग और एक छटाक जीरा। इन सभी चीज़ों को एक में मिलाओ, और गरम पानी के साथ दिन में दो बार रोगी पशु को पिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

इस रोग में पशु को साफ़ पानी और हलका भोजन देना चाहिए। यदि पशु ने जुगाली करना बंद कर दिया हो, तो जब तक वह जुगाली न करने लगे, उसे खाना न देना चाहिए। खाने के लिये चावल का माड़, हरी दूब और बाँस के पत्ते दिए जा सकते हैं।

मोच

ऊँची-नीची जमीन पर पैर पड़ने अथवा दौड़ने से कभी-कभी पशुओं के पैरों में मोच आ जाती है। मोच आने पर तुरंत चिकित्सा करनी चाहिए। यदि मोच को ज़्यादा दिनों तक रहने दिया गया, तो अधिक तकलीफ़ होने का डर रहता है।

पहचान—(१) पशु उदास दिखाई देता है

(२) लँगड़ाने लगता है।

(३) पैर सूज आ[illegible]।

चिकित्सा—(१) खारी नमक लाओ, और उसे

पीसकर बारीक बनाओ। फिर कड़ुए तेल में मिलाकर मोच के स्थान पर मालिश करो। फ़ायदा होगा।

(२) गोबर को गरम कर मोच पर बाँध दो अथवा पानी में औटाए हुए गोबर की भाप दो। अवश्य फ़ायदा होगा।

(३) सेंधा नमक, तीती खैनी, कड़ुवा तेल, सोंठ का चूर्ण, गोल मिर्च, अफ़ीम और अकवन के पत्ते। इन सभी चीज़ों को तेल में पकाकर मोच पर मलो। लाभ होगा।

मुँह और खुरों का पकना

यह छुतहा रोग है। जो पशु ज़्यादा सड़ी-गली और कीचवाली जगहों में रहते हैं, उन्हीं को यह रोग हुआ करता है। इसे बहुत-से लोग खुरहा भी कहते हैं। इस रोग में खुरों में छोटी-छोटी फुंसियाँ निकल आती हैं, और ज्वर हो आता है।

पहचान—(१) मुँह और खुरों में घाव हो जाता है और छोटी-छोटी फुंसियाँ निकल आती हैं। दूध देनेवाले पशुओं के स्तनों में भी फुंसियाँ निकल आती हैं।

(२) पशु खाना-पीना छोड़ देता और कमज़ोर दिखाई देता है।

(३) मुँह, सींग और पैर गर्म हो जाते हैं, तथा इनमें कुछ ललाई दिखाई देने लगती है।

चिकित्सा—(१) मखरा सिंदूर और मिर्च का चूर्ण। इन दोनो चीज़ों को भैंस के मक्खन में मिलाओ और उसे रोगी पशु के घाव पर लगाओ, लाभ होगा।

(२) गरम पानी और साबुन से छालों को धोओ। इस क्रिया से भी अत्यंत लाभ होगा।

(३) चार ड्राम कार्बोलिक एसिड, एक औंस ग्लिसरीन और एक पाइंट पानी। इन सभी चीज़ों को एक दिल करो और घाव पर लगाओ। अवश्य लाभ होगा।

(४) तिल्ली या नारियल के तेल में नीम के पत्तों को भिगोकर घाव पर रक्खो, फ़ायदा होगा।

(५) तिल या नारियल के तेल में गेंदे के फूल की पंखड़ियाँ भिगोकर घाव पर लगाओ। अवश्य लाभ होगा।

(६) एक सेर पुराना गुड़ और एक पाव सौंफ़ दोनो को एक सेर पानी में औटाओ और रोगी पशु को पिलाओ। लाभकर सिद्ध होगा।

(७) मुँह और पके हुए पैर को फिटकरी तथा सुहागे के पानी से धोते रहना चाहिए। इससे घाव

बढ़ने नहीं पाता और जल्द अच्छा भी हो जाता है।

(८) आँवले को पानी में भिगो दो और उसी पानी से बीमार पशु के मुँह तथा पैरों को धोओ। आँवले का पानी पिलाना भी लाभकारक होता है।

(९) नौ माशे कपूर, एक तोला शोरा और आधी छटाक देशी शराब। इन सभी चीज़ों को एक में मिलाकर रोगी पशु को पिलाओ। अवश्य रोग का नाश होगा।

(१०) एक भाग तूतिया और दस भाग अल-कतरा। दोनो को मिलाकर घाव पर लगाओ और ऊपर से पट्टी बाँध दो। लाभकर सिद्ध होगा।

खाने के लिये हल्का भोजन देना चाहिए। देर से पचनेवाला भोजन कभी न देना चाहिए। चोकर, सूखी या हरी-हरी घास देना बहुत ही अच्छा होगा। यह कहा जा चुका है कि यह छुतहा रोग है। इस-लिये दूसरे पशुओं को इस रोग से बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

बाँस निकलना

इसे कोठ का निकलना भी कहते हैं। बहुत-से पशुओं की बच्चेदानी दिन में कई बार निकल आती

है। यह भी एक भयानक रोग है। मादा पशुओं की इस रोग से ज़िंदगी बरबाद हो जाती है। उनसे बच्चा पैदा होने की आशा जाती रहती है। यदि बच्चा पैदा भी होता है, तो बहुत ही कमज़ोर।

पहचान—बच्चेदानी का बार-बार निकलना ही इस रोग की पहचान है।

चिकित्सा—(१) फिटकिरी के पानी का बार-बार छींटा देना चाहिए। तथा आध पाव फिटकिरी को पानी में घोलकर उसे बीमार पशु को पिलाना चाहिए।

(२) दोनो पुट्ठों पर रेंडी के तेल की मालिस करनी चाहिए।

(३) बालू की गरम पोटली की बार-बार सेंक करनी चाहिए। खाने के लिये सूखा भूसा देना चाहिए। ताज़ी और हरी-हरी घास भी दी जा सकती है, पीने के लिये गरम पानी देना चाहिए।

जोंक लगना

पशु अक्सर तालाबों और नदियों में नहाते हैं। तालाबों और नदियों में बड़ी-बड़ी जोंकें रहती हैं, जो पशुओं के बदन से चिपट जाती हैं। ये जोंकें पकड़ना तो जानती हैं, लेकिन इन्हें छोड़ना नहीं आता, ये ख़ून

घूमने में बड़ी तेज़ होती हैं। इसलिये जब ये किसी पशु को लगी हों, तो तुरंत ही छुड़ाने का उपाय करना चाहिए।

चिकित्सा—(१) जोंक को चिमटे से खींचना चाहिए।

(२) जोंक के मुँह पर नमक डालना चाहिए।

(३) यदि जोंक छोड़ दे और ख़ून बहने लगे, तो उस पर चूना या तंबाकू का पत्ता मलकर लगाना चाहिए।

(४) यदि किसी हालत से जोंक न छोड़े, तो तंबाकू की धूनी देनी चाहिए।

खुजली

आदमियों की तरह पशुओं के बदन में भी खुजली होती है, यह बीमारी अधिकतर गंदगी के कारण पैदा होती है। जो पशु ज़्यादातर गंदे स्थानों में रहते हैं, उन्हीं को यह बीमारी हो जाया करती है। इसे बहुत-से लोग छुतहा रोग भी समझते हैं।

पहचान—(१) रोएँ गिरने लगते हैं।

(२) चमड़े में कीड़े पड़ जाते हैं, और दाने तथा चकत्ते पड़ जाते हैं।

(३) पशु अपने बदन को बार-बार खुजलाता है। खुजलाने से उसे आराम मालूम होता है।

चिकित्सा—(१) दो छटाक गंधक, दो छटाक मिट्टी का तेल और दस छटाक कड़ुवा तेल। सबको मिलाकर दिन में दो बार खुजलीवाली जगह पर मलो। अवश्य फ़ायदा होगा।

(२) फ़िनाइल को पानी में डालकर उसीसे नहलाना चाहिए। इससे खुजली का रोग दूर हो जाता है।

(३) मिट्टी का तेल दूध में मिलाकर लगाने से खुजली का रोग नष्ट हो जाता है।

(४) आध पाव गंधक, आध सेर चूना और दस सेर पानी। सबको पकाकर बीमार पशु के बदन में लगाओ। अवश्य फ़ायदा होगा।

(५) एक छटाक नारियल का तेल, एक छटाव तारपीन का तेल, आधी छटाक कपूर, आधी छटाक गंधक का चूर्ण और पाव छटाक फ़िनाइल। इन सभी चीज़ों को आपस में मिलाकर रोगी पशु के बदन में लगाओ। खुजली जाती रहेगी।

कृमिरोग

पशुओं को भी कृमि रोग हुआ करता है। यह रोग जब किसी पशु को होता है, तब वह दिनोंदिन कम-

ज़ोर होता जाता है। उसका खाना-पीना भी बहुत कुछ अंशों में छूट जाता है। कीड़ों के काटने से वह बेचैन रहता तथा उदास दिखाई देता है।

पहचान—(१) पशु अपने दाँतों को कट-कटाता है।

(२) चारा नहीं खाता, मिट्टी खाता है और खाँसता है।

(३) पेट में दर्द होता है तथा कान नीचे की ओर लटक जाते हैं।

(४) मल में आँव मिला हुआ रहता है तथा साथ ही कीड़े भी गिरते हैं।

चिकित्सा—(१) तरोई के दस बीज लो और उन्हें मट्ठे में पीसकर रोगी पशु को पिला दो, कीड़े पेट के बाहर निकल आएँगे।

(२) तुलसी के पत्तों की भस्म, पलाश के बीज, नीम के बीज, बायबिड़ंग। इन सबको इंदुर रूमी लता के रस में मलकर रोगी पशु को खिला दो। कीड़े पेट में मर जायँगे, और बाहर निकल आएँगे।

(३) रोगी पशु को पलाश के बीज मट्ठे के साथ पीसकर पिलाओ, कीड़े मर जाएँगे।

खाने के लिये नमक के साथ भात का माड़

देना चाहिए, खाने के लिये सड़ी हुई चीजें तथा पीने के लिये गंदा पानी कभी न देना चाहिए। रोगी पशु के बँधने के स्थान को साफ-सुथरा रखना चाहिए। सफ़ाई के लिये पशु के घर में गंधक की धूनी देनी चाहिए।

जूँ या चिचड़ी पैदा होना

जूं या चिचड़ियाँ एक ख़ास तरह के कीड़े हैं, जो पशुओं के बदन में पड़ जाते हैं। किसी-किसी पशु के बदन में तो इनकी संख्या अधिक देखी जाती है। ये कीड़े मैल और गंदगी से उत्पन्न होते हैं। जिन पशुओं को नहलाया नहीं जाता और रात-दिन गंदगी में लिपटे हुए पड़े रहते हैं, उन्हीं के बदन में ये कीड़े अक्सर पड़ जाया करते हैं। ये कीड़े ख़ून चूसते, और पशु के शरीर को कमज़ोर बना देते हैं।

चिकित्सा—(१) चार भाग नमक, एक भाग मिट्टी का तेल और चार भाग कड़ुवा तेल। इन चीज़ों को मिलाकर पशु के बदन में लगाओ। जुएँ मर जायँगी।

(२) एक भाग तिल, दो भाग गंधक, आठ भाग वैसलीन, और आठ भाग कड़वा तेल, इन

सभी चीज़ों को मिलाकर पशु के बदन में मलो, चिचड़ियाँ मर जायँगी।

जब चिचड़ियाँ पड़ी हुई दिखाई दें, तब पशु को बहुत ही साफ़ रखने की कोशिश करनी चाहिए। उसे रोज़ नहलाना चाहिए, और उसके बड़े-बड़े बालों को कटवा देना चाहिए। यदि पशुओं की सफाई पर बराबर ध्यान दिया जाय, तो इनके बदन में चिचड़ियाँ पैदा ही न हों।

कंधे की सूजन

यह बीमारी अक्सर बैलों को होती है। जो बैल गाड़ी खींचते अथवा पुर में चलते हैं, उन्हीं को यह रोग हो जाता है। इस रोग में कंधे सूज आते हैं।

चिकित्सा—(१) जिस जगह सूजन हो, उसे घोंघे के पानी से मल-मलकर धोना चाहिए।

(२) सूजन पर मेंहदी के पत्तों को पीसकर गरम करके लगाना चाहिए।

(३) लोहा गरम करके फूले हुए स्थान को दाग देना चाहिए।

(४) अलसी के गरम तेल की मालिश करनी चाहिए।

बुख़ार

आदमियों की तरह जानवरों को भी बुख़ार होता है। कभी-कभी बुख़ार बड़े ज़ोरों का होता है, और कभी साधारण रूप में। बुख़ार खाने-पीने की गड़बड़ी और कभी-कभी मौसम की ख़राबी के कारण भी हुआ करता है।

पहचान—(१) रोएँ खड़े हो जाते हैं। नाड़ी ज़ोर से चलने लगती और शरीर गरम हो जाता है।

(२) प्यास ज़्यादा मालूम होती है, और खाने से अरुचि हो जाती है।

(३) आँख और कान आदि लाल हो जाते हैं, पेशाब भी लाल रंग का होता है।

चिकित्सा—(१) पाव छटाक नमक, पाव छटाक अदरक का रस, और आध पाव गुड़। सबको सवा सेर पानी में मिलाकर बीमार पशु को पिलाओ। बुख़ार अच्छा हो जायगा।

(२) एक तोला धतूरे की जड़, और चार तोले गोल मिर्च दोनो को एक जगह पीसकर नलकी से रोगी पशु को पिलाना चाहिए।

(३) आध पाव गुड़ और आधी छटाक चिरायता

का चूर्ण। दोनो को आध सेर पानी में मिलाकर रोगी पशु को पिलाना चाहिए।

(४) ५ तोले सोंठ, पाँच तोले चिरायता, पाँच तोले गोल मिर्च, पाँच तोले अजवाइन और पाँच तोले नमक। सबका चूर्ण बना लो और एक में मिलाकर माड़ के साथ रोगी पशु को खिलाओ। ज्वर छूट जायगा।

(५) ढाई तोले नमक लाहौरी, सवा तोले पगेरा, ढाई तोले चिरायते का चूर्ण और दो छटाक गुड़। इन सभी चीज़ों को सेर-भर गरम जल में मिलाकर रोगी पशु को पिलाओ। जब तक बुखार न उतर जाय, दिन में दो बार पिलाना चाहिए।

बुख़ार उतर जाने पर ही खाना देना चाहिए। बुख़ार उतर जाने पर बाँस के पत्ते देने चाहिए। मसूर के छिलके की भूसी भी पानी के साथ पकाकर दी जा सकती है। पशु को शीत से बचाने की कोशिश करनी चाहिए। उसे ऐसे स्थान में रखना चाहिए, जहाँ ठंडी हवा प्रवेश न कर सके। उसके रहने का स्थान भी साफ़-सुथरा होना चाहिए।

सींग टूटना

अक्सर पशु आपस में लड़ जाया करते हैं, और लड़ने में सींग टूट जाया करती है। सींग टूटने

से पशुओं को बड़ा कष्ट होता है। इसलिये फ़ौरन् उसकी चिकित्सा करनी चाहिए।

चिकित्सा—(१) टूटी हुई सींग पर नीम का तेल डालने से लाभ होता है।

(२) टूटी हुई सींग पर मछली का तेल लगाओ। अधिक फायदा होगा।

(३) आदमी के सिर के बाल, और ईंट का खोरा। दोनो एक ही साथ कूटो, फिर सरसों के तेल में मिलाकर टूटी हुई सींग पर रखकर पट्टी बाँध दो।

टूटी सींग में घाव हो जाता है। कभी-कभी सींग जड़ से उखड़ जाती है। ऐसी दशा में पशु को अधिक पीड़ा होती है, और एक घाव-सा हो जाता है। घाव को मक्खियों से बचाने की कोशिश करनी चाहिए। मक्खियों से बचाने के लिये घाव को तीसी के तेल और फिनाइल से तर रखना चाहिए।

थन की सूजन

इसे भारणू रोग भी कहते हैं। यह बीमारी दूध देनेवाले पशुओं के स्तनों में होती है। जब यह बीमारी होती है, तब पशुओं के थनों में सूजन पैदा हो जाती है। सूजन के साथ ही दर्द भी होने लगता है। कभी-कभी इतने जोरों से दर्द होता है कि पशु बेचैन हो जाता है।

पहचान—(१) स्तन से दूध की जगह पानी गिरने लगता है।

(२) स्तनों में सूजन पैदा हो जाती है।

(३) बीमारी बढ़ जाने पर स्तनों में पीब भी पैदा हो जाती है। और ज़ोरों से दर्द होने लगता है।

चिकित्सा—(१) घी आध सेर, काली मिर्च एक छटाक, और नींबू का रस आध पाव। सबको मिलाकर तीन दिन तक बराबर पिलाओ। थन की सूजन दूर हो जायगी।

(२) अंडी का तेल गरम करके धीरे-धीरे थनों पर मलो।

(३) प्रति दिन शाम को पाव-भर गुड़ आध सेर दही के साथ रोगी पशु को खिलाओ। रोग दूर हो जायगा।

हलका खाना देना चाहिए। किसी बच्चे को ऐसे पशु का दूध न पिलाना चाहिए। दूध दुहकर फेंक देना चाहिए, और स्तन को ख़ूब पोंछ देना चाहिए।

थनों का फटना

अक्सर दूध देनेवाले पशुओं के थन फट जाते हैं, और उनमें घाव हो जाता है। थन में घाव कभी

न बढ़ने देना चाहिए, क्योंकि दूध थन से ही होकर निकलता है, और उसे लोग पीते हैं। यदि कहीं थन का घाव बढ़ गया, तो फिर दूध पीने लायक़ न रह जायगा, और जो उसे पीएगा, वह अवश्य बीमार पड़ जायगा। इसलिये थनों के कटते ही उनकी फ़ौरन् चिकित्सा करनी चाहिए।

चिकित्सा—मक्खन या घी में थोड़ी-सी पिसी हुई हल्दी और थोड़ा-सा नमक डाल दो। इन सभी चीज़ों का एक लेप-सा तैयार कर लो, और उसे स्तन पर दिन में दो-तीन बार लगाओ। बहुत जल्द अच्छा हो जायगा।

थन का मारा जाना

जब दूध देनेवाले पशु दूध नहीं देते, तब उसे दूध का मारा जाना कहते हैं। इसमें दुधार पशुओं का दूध देना बंद हो जाता है। पशुओं को ही नहीं, यह रोग स्त्रियों को भी होता है।

चिकित्सा—आध पाव काली मिर्च लो, और आध पाव स्याह ज़ीरा। इन दोनो को मिलाकर पीसो और आध सेर गरम घी में मिलाकर रोगी पशु को दिन में तीन-चार बार पिलाओ। रोग जाता रहेगा।

आँखों की बीमारी

आदमियों की तरह पशुओं को भी आँखों की बीमारियाँ हुआ करती हैं। पशु की आँख की बीमारी में उसकी आँखों से पानी गिरने लगता है। उसके दोनो नेत्र लाल हो जाते हैं। आँखों के दोनो किनारों पर मल एकत्र हो जाता है। जब आँखों की ऐसी दशा दिखाई पड़े, तब समझ लेना चाहिए कि आँखों में कुछ-न-कुछ तकलीफ ज़रूर है।

चिकित्सा—(१) अगर आँख में चोट लगी हो, तो कबूतर के बीट को पानी में घिसकर आँख पर लगाओ। आराम हो जायगा।

(२) अगर आँख से पानी गिरता हो, तो तंबाकू का पानी आँख में डालना चाहिए। खैनी की पीक भी आँख में डालने से फ़ायदा होता है।

(३) अगर पशु आँखें न खोलता हो, तो कपड़े को सरसों के तेल में भिगोकर आँख के ऊपर पट्टी बाँधनी चाहिए।

(४) अगर फूला पड़ा हो, तो सहजने के बीज को रगड़कर, पानी में मिलाकर आँख को धोओ। फूला कट जायगा।

जिस पशु की आँखें ख़राब हों, अथवा जिसे आँखों

की कोई बीमारी हो, उसे अधिक रोशनी में न रखना चाहिए। अधिक रोशनी से आँखों में चकाचौंध पैदा होती है, और काफ़ी नुक़सान होता है।

घोड़े के रोग और उनकी परीक्षा

घोड़ा एक उपयोगी पशु है ! मनुष्यों का घोड़े से अधिक काम निकलता है। घोड़ा सवारी के काम में आता है। कुछ लोग घोड़े की पीठ पर बोझा भी लादते हैं। लड़ाई के दिनों में, घोड़े से अधिक काम लिया जाता है। पुराने ज़माने में, लड़ाई के मैदानों में घोड़े अधिक काम किया करते थे। आज-कल भी विना घोड़े के सेना और फ़ौज का काम नहीं चलता। घोड़ा ही एक ऐसा जानवर है, जिसने युद्ध के मैदानों में अपना अधिकार जमाया है। यह बड़ा वीर और स्वामिभक्त भी होता है। इसकी स्वामिभक्ति की बहुत-सी कहानियाँ कही और सुनी जाती हैं।

घोड़े को लोग बड़े प्यार से पालते हैं। हमारे देश में घोड़े की सवारी वीरों की सवारी समझी जाती है। बड़े-बड़े अमीर लोग ही अधिकतर घोड़ा पालते हैं। कुछ लोग घोड़े के द्वारा व्यवसाय करते और रोज़ी कमाते हैं—जैसे इक्के और ताँगेवाले।

कहने का तात्पर्य यह कि घोड़े से मनुष्यों का अधिक काम निकलता है। इसलिये घोड़े के स्वास्थ्य पर अच्छी तरह ध्यान देना ही चाहिए। मनुष्यों की तरह घोड़े को भी अनेक रोग हो जाया करते हैं। इन रोगों की चिकित्सा करनी उतना ही जरूरी है, जितना हम अपनी चिकित्सा करना जरूरी समझते हैं। इसलिये हरएक घोड़ा पालने वाले को घोड़े के रोगों और उसकी चिकित्सा से कुछ-न-कुछ परिचित होना ही चाहिए। चिकित्सा के पहले रोगों की परीक्षा करनी चाहिए, विना परीक्षा किए हुए न तो चिकित्सा करनी चाहिए, और न उस चिकित्सा का रोगी के ऊपर कुछ असर ही पड़ सकता है। इसलिये सर्वप्रथम यहाँ रोगों की परीक्षा के संबंध में ही लिखा जा रहा है।

पाँव के रोग

पाँव के रोगों में मोतड़ा बहुत मशहूर है। इस रोग में घोड़े के दोनो घुटने सूज आते हैं। हड्डा घुटने का रोग है। जहाँ घुटना मुड़ता है, वहाँ एक पतली और नुकीली हड्डी निकल आती है। वीर हड्डी भी हड्डी का एक रोग है। इस रोग में एक मोटी हड्डी पैर की एँड़ी से निकल आती है। पुश्त सुम का

रोग है। सुम के ऊपर जिस जगह बाल होता है, वहीं यह रोग हुआ करता है। बैजा पाँव के पुट्ठे का रोग है। इसके पैर के पुट्ठों का मांस आगे-पीछे अंडे की तरह फूल उठता है। पीलपाव पैर का रोग है। इस रोग में पैर हाथी के पैरों की तरह फूल आते हैं। गजचर्म चमड़े का रोग है। इस रोग में घोड़े के बदन का चमड़ा हाथी के चमड़े की तरह कठोर हो जाता है। शिकाक सुम का रोग है। इस रोग में सुम जगह-जगह फट जाती है, और उसमें कुछ-कुछ घाव भी हो जाते हैं।

जिस प्रकार आदमियों के शरीर में कफ, पित्त और वात की प्रधानता रहती है, उसी तरह घोड़े के शरीर में भी। इन्हीं तीनों चीजों का घोड़े के स्वास्थ्य पर असर भी पड़ा करता है। घोड़ा भी इन्हीं तीनो चीजों के कम या अधिक प्रभाव से रोगों का शिकार हुआ करता है। घोड़ा तीन तरह की प्रकृति का होता है। एक बादी, दूसरा बलगमी और तीसरा सफरावी। बादी प्रकृतिवाले घोड़े को खुश्की अधिक होती है। वह उदास रहता और तीव्र स्वादवाली चीजें खाने की इच्छा करता है। उसके बदन की रगें ऊपर प्रत्यक्ष रूप से

दिखाई देती हैं। बलग़मी प्रकृतिवाले घोड़े के बाल नरम और चिकने होते हैं। वह कम खाता है, और चलता अधिक है। मफ़रावी घोड़ा चंचल अधिक होता है। वह चलने में तेज़ होता है, और बड़ी प्रसन्नता के साथ भोजन खाता है।

प्रकृति के अलावा घोड़े की नाड़ी-परीक्षा, मूत्र-परीक्षा, नेत्र-परीक्षा और मल-परीक्षा भी करनी चाहिए। घोड़े की नाड़ी नीचे के जबड़े की ओर रहती है। जब घोड़ा तंदुरुस्त रहता है, तब नाड़ी एक मिनट में ४० बार चला करती है। जब घोड़े को सर्दी लगती है, तब वह सफेद रंग का पेशाब करता है। जब वात-कफ की अधिकता होती है, तब पीले-गाढ़े रंग का, और जब गर्मी की अधिकता होती है, तब लाल रंग का पेशाब करता है। नेत्र-परीक्षा से भी घोड़े का रोग जाना जा सकता है। तंदुरुस्त घोड़े की पुतली का रंग गुलाबी होता है। जब गर्मी का प्रकोप होता है, तब घोड़े के नेत्र का रंग लाल हो जाता है। जब ललाई में कालापन आ जाय, तब समझ लेना चाहिए कि घोड़े की जिंदगी खतरे में है। इसी प्रकार मल-परीक्षा से भी घोड़े की बीमारी जानी जा सकती है।

आँखों का रोग

घोड़े की आँखों में तरह-तरह के रोग हो जाया करते हैं। आँखों से पानी गिरने लगता है, जाला पड़ जाता है, धुँधला दिखाई देने लगता है, और कभी-कभी फूली भी पड़ जाती है। आँखों में रोगों के प्रकट होते ही फ़ौरन् चिकित्सा करनी चाहिए।

चिकित्सा—(१) अगर आँखों में चोट लगी हो, तो नमक और फिटकिरी के पानी से आँखों को धोना चाहिए।

(२) अगर घोड़े की आँख में झटका लगा हो, तो त्रिफला के पानी को छानकर उसमें फिटकिरी मिलाओ, और उसी का घोड़े की आँखों में छींटा मारो, आँखें अच्छी हो जायेंगी।

यदि आँखों में फूली पड़ी हो, तो नीचे लिखी हुई दवाइयाँ काम में लाई जा सकती हैं—

(१) आदमी के पेशाब का घोड़े की आँखों में छींटा मारो, फूली अच्छी हो जायगी।

(२) सेंदुर और चीनी एक में पीसकर फूली पर लगाओ। फूली अच्छी हो जायगी।

(३) साँभर नमक और बँगला पान पीस लो। फिर पानी में घोलकर मुँह के द्वारा उसी की

फुल्ली प्रतिदिन दो चार घोड़े की आँखों में मारो। अवश्य लाभ होगा।

(४) रीठे को पत्थर पर घिसकर घोड़े की आँख में लगाओ। अवश्य लाभ होगा।

(५) मुर्ग़ी और कबूतर का ताजा बीट आँखों में आँजन की तरह लगाने से अत्यंत फ़ायदा होता है।

(६) पुरानी ईंट को सुरमे की तरह पीसो। और पानी में घोलकर उसी का आँखों में छींटा मारो। फूली नष्ट हो जायगी।

यदि आँख में जाला या नाख़ूना पड़ गया हो, तो नीचे की दवाइयाँ काम में लाई जा सकती हैं—

(१) भाँग, सुहागा, सेंधा, बीजबंद, काली मिर्च, फूली हुई फिटकिरी और गूगुल। इन सभी चीज़ों को बराबर-बराबर लो, और कड़ुवे तेल में मिलाकर आँजन बना लो। इसी आँजन को घोड़े की आँख में लगाओ। बीमारी जाती रहेगी।

कभी-कभी घोड़े की आँख में सूजा और लकलक हो जाया करता है। यह बड़ा भयानक रोग है। इस रोग से अक्सर आँख जाती रहती है। नीचे लिखी हुई दवाई से लाभ हो सकता है—

कहीं से एक मेंढक पकड़कर लाओ, और उसे कुल्हड़ में बंद करके तेज़ आग से जलाओ। जब वह जलकर राख हो जाय, तब उसमें तेल मिलाकर आँखों में लगाओ, बहुत ही फ़ायदा होगा।

ख़ून गिरना

कभी-कभी अत्यंत परीक्षा करने के कारण घोड़े के मुँह से ख़ून गिरने लगता है। खराई से भी घोड़ा रक्त वमन करने लगता है। बहुत-से लोग इस रोग को सरसंबूल भी कहते हैं।

चिकित्सा—हर्र, आँवला और शौतरी। इन तीनो चीज़ों को मिलाओ, और दाना देने के एक घंटे पूर्व घोड़े को दो, अवश्य लाभ होगा।

नाक से ख़ून गिरना

कभी-कभी चोट लगने से घोड़े की नाक से ख़ून गिरने लगता है। ज़्यादा मेहनत करने से भी नाक से ख़ून गिरा करता है। नाक से ख़ून गिरने के साथ ही फ़ौरन् चिकित्सा करनी चाहिए। कारण, यदि नाक से ख़ून का गिरना अधिक देर तक जारी रहा, तो घोड़ा कमज़ोर हो जायगा।

चिकित्सा—(१) गाय का घी सिर में मलना चाहिए।

(२) हिरन तथा भैंस के सींग की राख नाक में लगाने से गिरता हुआ ख़ून बंद हो जाता है।

दाँतों का कोढ़ होना

कभी-कभी घोड़े के दाँत कुंठित हो जाते हैं। ऐसी दशा में वे खाना छोड़ देते और उदास हो जाते हैं।

चिकित्सा—कहीं से कनैर की छाल लाओ, और उसे पीसकर शहद में मिलाओ। फिर नींबू के बराबर उसकी गोलियाँ बना लो। उन गोलियों को चार दिन तक लगातार घोड़े को खिलाओ, घोड़ा अच्छा हो जायगा।

सिर-दर्द

कभी-कभी घोड़े के सिर में दर्द होने लगता है। जब कभी घोड़े के सिर में दर्द होता है, तब घोड़ा उदास हो जाता है, और खाना-पीना छोड़ देता है। उसके नाक, आँख और मुँह से पानी गिरने लगता है।

चिकित्सा—एक भाग नौसादर और चार भाग केसर एक साथ मिलाकर खिलाने से बहुत ही लाभ होता है।

खाँसी

यह बड़ा भयानक रोग है। यह सर्दी से पैदा होता है। जब यह रोग होता है, तब घोड़ा बार-बार

छींकना है, और उसकी नाक से पानी गिरने लगता है। इस रोग की फ़ौरन् चिकित्सा करनी चाहिए। लापरवाही करने से अधिक उपद्रवों के खड़े होने का डर रहता है।

चिकित्सा—(१) आध सेर प्याज़ को पाव-भर घी में मिलाकर घोड़े को खिलाओ, अत्यंत लाभ होगा।

(२) पानी पिलाने के पहले घोड़े को एक प्याज़ खिला दो, और फिर इसके बाद खाने के लिये बाँस की पत्तियाँ दो।

जुक़ाम

जुक़ाम एक बहुत ही भयानक रोग है, यह सर्दी से पैदा होता है। अगर जुक़ाम की उचित रूप से शीघ्र दवा न की गई, तो उससे अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाते हैं।

चिकित्सा—पाव-भर मेथी के साथ पैसे-भर काली मिर्च घोड़े को खिलाओ। जुक़ाम दूर हो जायगा।

खुजली

यह छुतहा रोग है। खुजली जब एक घोड़े को होती है, तब आस-पास रहनेवाले दूसरे घोड़े भी उसके शिकार हो जाते हैं। इस रोग में घोड़े के

शरीर में घाव हो जाते हैं, और वह वे बहुत ही कष्ट पाता है।

चिकित्सा—चार सेर खट्टा दही, आध सेर नीम की पत्ती, पाव-भर काला ज़ीरा, पाव-भर लहसुन और आध पाव काली मिर्च, दही को छोड़कर सब चीज़ों को एक साथ पीस लो और फिर उन्हें दही में मिला दो, रोगी घोड़े का बदन साबुन से साफ़ करके फिर इस दवा को लगाओ और घोड़े को धूप में रक्खो। चार-पाँच दिन तक बराबर दवा लगाने से खुजली दूर हो जायगी।

अग्निबाव

इस रोग में बदन का चमड़ा सब जगह से जल-कर अलग हो जाता है। ठीक उसी तरह, जिस तरह आग से जलने के बाद हो जाता है। यह छुतहा रोग है। इसलिये दूसरे पशुओं को इससे बचाना चाहिए।

चिकित्सा—(१) पैसे-भर पारा, पैसे-भर पपरिया-कत्था और पैसे-भर कपूर। इन सभी चीज़ों को आध सेर घी में मिला दो, और तीन दिन तक घाव पर लेप करो। तीसरे दिन पीली मिट्टी से घाव को धो डालो, घाव अच्छा हो जायगा।

(२) आध सेर धान का भात, आध सेर नीम के पत्ते और आध सेर दही। तीनो को एक में मिलाकर २० दिन तक रोगी पशुओं को खिलाओ, अधिक फ़ायदा होगा।

झुकनबाद

यह बड़ा भयानक रोग है। यह रोग जिस घोड़े को होता है, वह चल-फिर नहीं सकता। वह पैर पटकता और घमिट-घमिटकर चलता है।

चिकित्सा—(१) इक्कीस दिनों तक लगातार घोड़े को थोड़ी-थोड़ी हींग खिलाओ, फ़ायदा होगा।

(२) पारे के साथ लहसुन खिलाओ। बहुत ही फ़ायदा होगा।

(३) प्रतिदिन सबेरे घोड़े को सत्तू में हल्दी, पारा और पीपल मिलाकर दो। रोग जाता रहेगा।

बाद जीरा

यह रोग बादी से पैदा होता है, इस रोग के कारण घोड़े की कमर झुक जाती है, और उसमें दर्द पैदा होने लगता है। पेट सूखने लगता है, कुछ ही दिनों में घोड़ा इतना कमज़ोर हो जाता है कि उसमें उठने की ताक़त नहीं रह जाती।

चिकित्सा—(१) तिल के तेल और नवासार

को पानी में औटाओ, फिर उसे बीमार घोड़े को पिलाओ। रोग जाता रहेगा।

(२) जिस जगह दर्द हो, वहाँ मरेम पानी में पकाकर लगाना चाहिए।

(३) आध पाव कुटकी, आध पाव सोंठ, आध पाव कबीला, आध पाव मिर्च, डेढ़ तोला गूगुल। इन सभी चीजों को पानी में पीसकर गरम करो, और गरम-गरम दर्द के स्थान पर लेप कर दो, दर्द अच्छा हो जायगा।

पीठ पर घाव

कभी-कभी चारजामे इत्यादि की रगड़ से घोड़े की पीठ पर घाव हो जाता है। जब घोड़े की पीठ पर घाव हो, तब सवारी करना बंद कर देना चाहिए।

चिकित्सा—(१) ३ माशे मुर्दाशंख, तीन माशे मुसब्बर, तीन माशे मोम, पाव-भर तिल का तेल और एक पान। इन सभी चीजों को पीसकर तेल में पकाओ। जब पक जायँ, तब उतारकर धर लो। फिर घाव को नीम की औटी हुई पत्ती से धोओ। धोने के पहले उसी पानी में थोड़ी-सी फिटकरी मिला दो। इसके बाद इसी मलहम को लगाओ। घाव अच्छा हो जायगा।

(२) आध सेर सरसों का तेल, आध पाव लहसुन, एक छटाक सज्जी, एक छटाक लाल मिर्च, आध पाव नीम की पत्ती, एक तोला मुर्दाशंख, दो तोले सेंदुर और दो तोले संगजराहत। इन सभी चीजों को तेल में पकाओ। जब मलहम तैयार हो जाय, तब उतारकर रख लो, और उसी को घाव पर लगाओ, घाव अच्छा हो जायगा।

खुश्कें

यह गले का रोग है। इस रोग के होने के पहले घोड़े की पेशाब बंद हो जाती है। इस रोग से घोड़ा बेचैन हो जाता है, और खाना-पीना छोड़ देता है।

चिकित्सा—काली मिर्च, पान, पीपल, अदरख और सेंधा नमक। सभी चीजों को बराबर-बराबर लेकर चूना में मिलाओ, और सात दिन तक लगातार घोड़े को खिलाओ, घोड़ा अच्छा हो जायगा।

किनार-रोग

यह रोग हाजमा बिगड़ जाने से पैदा होता है। जुकाम होने और ठंडी हवा लगने से भी इसकी उत्पत्ति होती है। जब यह रोग होता है, तब घोड़ा बार-बार छींकता है। नाक से पानी गिरने लगता है, और वह खाना-पीना छोड़ देता है।

चिकित्सा—(१) ढाक के पके हुए ढाई पत्ते घोड़े को खिलाओ। अत्यंत लाभ होगा।

(२) चार तोले सरसों का तेल लाओ, उसे आग पर गरम करो, और उसमें चार तोले शहद तथा चार माशे पीसा हुआ कायफल मिलाओ। इसी दवा को घोड़े की नाक में डालो, अवश्य फ़ायदा होगा।

सीतावंद

यह रोग घोड़े के कंधे में होता है। घोड़े के कंधे में सूजन पैदा हो जाती है। यह रोग कब्जियत से पैदा होता है।

चिकित्सा—भिलावा, बड़ी पीपल, कूट, ज़ीरा, काली मिर्च, हींग, सुहागा, गूगुल और हल्दी। इन सभी चीजों को कूट-पीस तथा छानकर आपस में मिला लो, फिर सात दिन तक लगातार एक-एक छटाक रोगी घोड़े को खिलाओ, अवश्य लाभ होगा।

वजर हड्डी

यह जाँघों और घुटने की गाँठों का रोग है, इस रोग में घोड़ा अपने पैर को उठाए रहता है। और दर्द से बेचैन रहता है।

चिकित्सा—कसीस, हींग, सोंठ, पीपल, काली मिर्च,

सज्जी, साँभर नमक, सेंधा नमक और कड़वी तुंबी। इन सभी चीज़ों को बराबर लाओ, और कूट-पीस तथा छानकर चूर्ण तैयार कर लो। फिर सबको मिलाकर आक के दूध में सानो और उसे आग पर गरम करो। इसी में से थोड़ा-सा लेकर एक फिटकरी के टुकड़े पर लगाओ, और गाँठों पर बाँध दो, दर्द जाता रहेगा।

सुमरोग

सुमरोग घोड़े का एक ख़ास रोग है। कड़ी जगह में दौड़ने अथवा अचानक ऊँची-नीची ज़मीन में पैर पड़ जाने से यह रोग पैदा होता है। जब यह रोग पैदा होता है, तब घोड़े को बड़ी तकलीफ होती है। वह चलने-फिरने में असमर्थ हो जाता है, और खड़े रहने पर भी अपना पैर उठाए रहता है।

सुमरोग कई तरह का होता है। जैसे सुम का घिस जाना, रस उतरना और सुम का फट जाना इत्यादि।

चिकित्सा—(१) पैसा-भर तूतिया, अधेला-भर कपूर, थोड़ा-सा मोम और थोड़ी-सी चर्बी। इन सभी चीज़ों को रेंड़ी के तेल के साथ घाव पर लगाओ। घाव अच्छा हो जायगा।

(२) सुम में घी मलो, और ऊपर से लीद का

लेप करके कपड़ा बाँध दो। साथ ही सेक भी करते रहो। दर्द दूर हो जायगा।

नोट—ये दवाइयाँ रस उतरने पर देनी चाहिए।

यदि घोड़े की सुम फट गई हो, तो नीचे लिखी हुई दवा देनी चाहिए। डेढ़ पैसा-भर तारपीन का तेल, एक छटाक धूप और आध पाव मोम। इन सभी चीजों को एक में मिलाकर सुम में भर दो। इसके बाद दो हिस्से तीसी के तेल में एक हिस्सा पत्थर के कोयले का तेल मिलाकर सुम पर बराबर रखते रहो। अत्यंत लाभ होगा।

अगर घोड़े की सुम घिस गई हो, तो यह दवा लगानी चाहिए। पत्थर के कोयले का तेल पाव-भर, दो सेर चर्बी और आध पाव मोम। इन सभी चीजों को आग पर चढ़ाकर मलहम तैयार कर लो। इसी मलहम को प्रतिदिन इस्तेमाल करो। घाव अच्छा हो जायगा।

ज्वर

कभी-कभी घोड़े को ज्वर भी हो जाता है। जब ज्वर होता है, तब शरीर गरम हो जाता है, और घोड़ा खाना-पीना छोड़ देता है। घोड़े का ज्वर कई तरह का होता है। जैसे सन्निपातज्वर, कफज्वर और कामला-ज्वर इत्यादि।

सन्निपातज्वर का हमला सहसा होता है। यह बड़ा भयानक रोग है। जब इस ज्वर का प्रकोप होता है, तब नाड़ी बड़े वेग से चलने लगती है। घोड़ा जल्दी-जल्दी साँस लेने लगता है। सारा शरीर जलने लगता है, और नाक में सुर्खी आ जाती है।

चिकित्सा—(१) शोरा और काला नमक दो पैसे-भर, सुरमा और डिजिटेलिस अधेला-भर। इन चीज़ों को शहद में मिलाकर गोली बनाओ, और दो-दो घंटे के बाद घोड़े को खिलाओ। रोग दूर हो जायगा।

(२) अधेला-भर टार्टरैमेंटिक और दो पैसे-भर शोरा। इन दोनो चीज़ों को मैदा और शीरा में मिलाकर गोलियाँ तैयार करो। इन्हीं गोलियों को दिन में दो बार एक-एक गोली खिलाओ। अत्यंत लाभ होगा।

कफज्वर कफ के कारण पैदा होता है। इसमें सारा शरीर गरम हो जाता है, और मुँह से कफ निकलने लगता है।

चिकित्सा—दो पैसे-भर गंधक, आधी छटाक हींग, आधी छटाक मुलहठी का चूर्ण और आधी छटाक तारपीन का तेल। इन सभी चीज़ों को एक में मिला लो, और चार गोलियाँ बना लो। चार दिन एक-एक गोली खिलाओ। ज्वर छूट जायगा।

कामला-ज्वर में घोड़ा पीले रंग का गाढ़ा पेशाब करता है। खाना-पीना छोड़ देता है। और कब्जियत की शिकायत रहती है। कभी-कभी दस्त बिलकुल बंद हो जाता है, और घोड़ा परेशान हो उठता है।

चिकित्सा—धेला-भर मुसब्बर, दोकरा-भर सुरमा और एक ड्राम कैलोमल। सबको शीरा में मिलाकर एक गोली बना लो और जब तक दस्त न हो, चार-चार घंटे के बाद एक गोली खिलाते रहो।

आँव-दस्त

कभी-कभी घोड़े को आँव-दस्त होने लगते हैं। यह भी एक भयानक बीमारी है। यदि इसकी तरफ़ से लापरवाही की गई, तो घोड़ा कमज़ोर पड़ जाता है और उठने के लायक़ भी नहीं रह जाता।

चिकित्सा—बबूल का गोंद आधी छटाक, पुदीने की पत्ती आधी छटाक, दोकरा-भर अफ़ीम और आधी छटाक मिट्टी का चूर्ण। इन सभी चीज़ों को एक में मिला दो और दिन में एक या दो बार घोड़े को खिलाओ, अवश्य आराम होगा।

ताव खाना

कभी-कभी घोड़े ताव खा जाते हैं। ऐसा होने पर

घोड़े का शरीर गरम हो जाता है। बदन की रगें काँपने लगती हैं। घोड़ा खाना-पीना छोड़ देता है। वह दिन-रात सुस्त होकर पड़ा रहता है। कुछ दिनों के बाद उसकी हालत बहुत खराब हो जाती है, और वह उठने-बैठने में भी असमर्थ हो जाता है।

चिकित्सा—छोटी इलायची, काली मिर्च, पीपल, सोंठ, जवाखार, भूनी हींग और सज्जी। सबको बराबर लेकर उनका चूर्ण तैयार कर लो। इसके बाद देवदारु की लकड़ी और शीशम, इन दोनो को आध सेर पानी में उबालो। उबाले हुए पानी में चूर्ण को मिलाकर घोड़े को पिला दो। अधिक लाभ होगा।

कुछ अन्यान्य रोग

वैजा और काना—इस रोग में मक्खन के साथ चूने को मिलाकर मालिश करनी चाहिए और कंडे की आग से सेकना चाहिए।

हड्डा—अंडी के बीजों की मींगी, उरद का चूर्ण, नीला थोथा और सेंधा नमक। इन सभी चीजों को चार-चार तोले लाओ और कूट-पीस कर उरद के आटे में सानकर टिकिया बना लो। फिर टिकियों को तवे पर सेक कर गरम-गरम हड्डे पर बाँध दो। तीन दिन तक पट्टी बँधी रहने देनी चाहिए। चौथे दिन

पट्टी खोलने पर अगर सूजन हो, तो फिर वही ऊपर की दवा बाँधनी चाहिए।

फीलपाँव—इस रोग में हाथी के पैर की तरह पैर फूल आते हैं। इस रोग में पैर का दागना अत्यंत लाभकारी होता है।

खुदगाह—इस रोग में पैर में एँड़ी के पास सूजन हो आती है, और दर्द होने लगता है। इस रोग में एँड़ी में तेल लगाकर सेकना चाहिए, और अरंड के पत्ते की गरम-गरम पट्टी बाँधनी चाहिए।

जहरबाद—कमौंदी, अदरख, मिर्च और पान। सबको बराबर-बराबर लेकर एक में मिला दो और दिन में दो बार रोगी घोड़े को खिलाओ। रोग जाता रहेगा।

प्रमेह—घोड़े को कतीला देने से उसका प्रमेह-रोग जाता रहता है।

कुत्ता काटने पर छदाम-भर आदमी की खोपड़ी का चूरा और डेढ़ रत्ती मकोय। गुड़ में इन चीज़ों को मिलाकर गोली बना लो, और उसे घोड़े को खिलाओ। कुत्ते का विष असर न करेगा।

हिचकी—शहद के साथ मोर पंख की राख चटाओ। हिचकी बंद हो जायगी।

गाँठ की सूजन—कभी-कभी घोड़े की गाँठों में सूजन

हो आती है। गाँठों में सूजन होने पर यह दवा काम में लानी चाहिए। फिटकिरी और चीनी के बरतन का टुकड़ा एक में पीसो और पानी में मिलाकर उसका एक लेप तैयार करो। लेप में थोड़ा-सा काजर भी मिला दो, फिर उसे गाँठों पर लगाओ, और ऊपर से अरंड के पत्तों की पट्टी बाँध दो।

गिल्टी—आधी छटाक नौसादर, आध पाव सिरका और स्प्रिट, आधी छटाक कपूर। इन सभी चीजों को मिलाकर कपड़े में तरकर बाँधो। गिल्टी अच्छी हो जायगी।

हाथी के रोग और उनकी चिकित्सा

हाथी से भी मनुष्यों का अधिक काम निकलता है। हाथी सवारी के काम में आता है। प्राचीन काल में युद्ध-भूमि में इसका उपयोग किया जाता था, किंतु आज-कल लड़ाई के मैदानों में इसके दर्शन नहीं होते। आजकल इससे सवारी का ही काम लिया जाता है। बड़े-बड़े राजा-महाराजा हाथी पर सवारी करते हैं। गरीब हाथी को नहीं पाल सकते। हाथी अमीरों और राजा-महाराजाओं का पशु है। वही लोग इसे पालते और इस पर सवारी करते हैं। किसी-किसी देश में हाथी पर लट्ठे और बाँस इत्यादि भी लादे जाते हैं।

हाथी कुछ थोड़े-से ही लोगों का पशु है। आम जनता हाथी से बहुत कम लाभ उठाती है। फिर भी जो लोग हाथी पालते हैं, उन्हें हाथी के स्वास्थ्य पर ध्यान देना ही चाहिए। हाथी अच्छे-अच्छे भोजन खाता है और अच्छी जगह में रहना पसंद करता है। इसे स्वतंत्रता अधिक प्रिय लगती है। यह वन का पशु है। इस-लिये बस्ती और पर्वतों पर घूमना इसे अधिक अच्छा

लगता है। यह बड़े आनंद से जल में विहार करता है, और धूल तथा कीचड़ को अपने ऊपर उछालता है।

हाथी को शीत, धूप और वर्षा से बचाने की कोशिश करनी चाहिए। हाथी जिस मकान में रहे, उसमें लंबी-लंबी खिड़कियाँ वायु के लिये होनी चाहिए। इसके खाने-पीने पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। खाने-पीने और रहन-सहन की ओर ध्यान न देने से हाथी बीमार हो जाता है। उसके बदन में रोग हो जाते हैं। हाथी को भी विभिन्न कारणों से विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ हुआ करती हैं। यहाँ हाथी के कुछ रोगों और उसकी चिकित्सा का संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

ज्वर

हाथी को जब बुखार होता है, तब उसका बदन काँपने लगता है। वह रह-रहकर बड़े ज़ोर से चिग्घाड़ मारता है। मुँह से लार गिरने लगती है और बदन सुस्त हो जाता है।

चिकित्सा—पाटला, गिलोय, अतीस, कूट, परवल की जड़, धनिया, कुंडी, पित्तपापड़ा और धाय के फूल। इन सभी चीज़ों का क्वाथ बनाकर हाथी को पिलाओ। ज्वर छूट जायगा।

पेट में कीड़े

मिट्टी खाने और गंदा पानी पीने से हाथी के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े पड़ने पर हाथी बेचैन रहता है। वह खाना-पीना छोड़ देता है। उसे नींद नहीं आती। वह चिंघाड़ता और खीझ प्रकट करता है।

चिकित्सा—(१) गाय के मूत्र में शराब मिलाकर पिलाने से हाथी के पेट के कीड़े मर जाते हैं।

(२) गाय के मूत्र के साथ बाय बिड़ंग मिलाकर पिलाओ, कीड़े गिर पड़ेंगे।

(३) पाव-भर राई, पाव-भर नमक और पाव-भर गुड़ इन सभी चीज़ों को मिलाकर सुबह-शाम हाथी को खिलाओ और गरम पानी पिलाओ। पेट के कीड़े मर जायँगे।

पेट में दर्द

कभी-कभी हाथी के पेट में दर्द पैदा हो जाता है। जब हाथी के पेट में दर्द होता है, तब वह बार-बार उठता-बैठता और लेटता है। पैरों को पसारता और बटोरता भी है।

चिकित्सा—(१) बायबिड़ंग, हींग, इंद्र जौ, हल्दी और दारुहल्दी। इन सभी चीज़ों को मिलाकर गोली बना

लो और उसी गोली को हाथी को खिलाओ, पेट का दर्द बंद हो जायगा।

(२) सोंठ, हींग और सोंचर नमक। इन तीनों चीज़ों को गुड़ के साथ हाथी को खिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

पेचिश

हाथी को पेचिश भी पड़ता है। जब पेचिश पड़ता है, तब हाथी के पेट में दर्द होता है। वह बार-बार उठता, बैठता और लेटता है। दर्द के कारण वह अपनी सूँड़ से कोख को दबाता और गंदा मल बाहर निकालता है।

चिकित्सा—नमक, साबुन और सोंचर। इन तीनों चीज़ों को बराबर-बराबर मिलाकर हाथी को खिलाओ। पेचिश बंद हो जायगी।

गुल्म

इस रोग में पेट फूल आता है। पेट के अंदर एक तरह का गोला तैयार हो जाता है। पाख़ाना साफ़ नहीं होता और गंदा पेशाब होता है। भूख बिलकुल नहीं लगती। मन उदास रहता है।

चिकित्सा—मिर्च, पाँचो नमक, त्रिफला, अदरख,

अजवाइन, सोंठ और जोंगी। इन सभी चीज़ों को बराबर लाओ। शराब में मिलाकर रोगी हाथी को पिलाओ, अवश्य लाभ होगा।

अफरा

इस रोग में हाथी का पेट फूल आता है। उसे भूख बिलकुल नहीं लगती। मल-मूत्र त्याग करने में कष्ट मालूम होता है। कभी-कभी मल-मूत्र रुक भी जाता है।

चिकित्सा—(१) अधिक परिश्रम कराना और दौड़ाना चाहिए। बग़ल से लेटाकर पेट पर कड़ुए तेल की मालिश करनी चाहिए। बार-बार करवट बदलवाना चाहिए।

(२) एक पाव गोखरू, एक पाव भुनोम, एक पाव सुहागा, आध पाव नौसादर और एक सेर गुड़। इन सभी चीज़ों को पीसकर गुड़ में गोली बना लो, और रात में हाथी को खिलाओ। अवश्य लाभ होगा।

माँड़ा

यह आँख का रोग है। यह मकड़ी के जाले की तरह पुतली को घेर लेता है। इसका रंग सफ़ेद होता है।

चिकित्सा—नौसादर को तिल के तेल में घिसकर हाथी की आँख में लगाओ। माँड़ा अच्छा हो जायगा।

फूली

इसका रंग सफ़ेद होता है। यह आँख से अलग मोटी होकर लटक पड़ती है। एक प्रकार से फूली आँख को बिलकुल ख़राब ही कर देती है।

चिकित्सा—माजूफल, निर्मली, रतनज्योति, लावा फिटकिरी, छोटी-बड़ी हर, आँवा हल्दी, गूगुल, जायफल, अफ़ीम, हाथी का नख, सफ़ेद चिरमिटी और सिरसा के बीज की मींगी। इन सभी चीज़ों को कूट-पीसकर कपड़-छान कर लो, और शहद में मिला-कर अंजन की तरह हाथी की आँख में लगाओ। फूली कट जायगी।

नाख़ूना

इस रोग में आँख की पुतली ललाई से घिर जाती है, और पुतली के किनारे एक मोटा डोरा-सा उभर आता है।

चिकित्सा—छोटी हर्र, नीला थाथा, माजूफल और लोहचूर्ण। इन सभी चीज़ों को बराबर-बराबर परिमाण में लाओ और कूट-पीस तथा कपड़-छान करके अंजन की तरह हाथी के नेत्रों में लगाओ। रोग अच्छा हो जायगा।

दाँत में कीड़े

कभी-कभी हाथी के दाँत में कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े विदूषित खाना खाने के कारण पड़ते हैं। इससे हाथी को बहुत कष्ट मिलता है, इसलिये फ़ौरन् इसकी चिकित्सा करनी चाहिए।

चिकित्सा—बराबर-बराबर परिमाण में हरताल, संखिया, गंधक, मैनसिल, जवाखार और आँवलासार गंधक लाओ। इन सभी चीजों को भटकटैया के रस में खरल करो। जब दवा तैयार हो जाय, तब कीड़ेवाले दाँत में लगाओ। कीड़े मर जायँगे। कीड़ेवाले दाँत में सुअर की चर्बी लगाने से भी कीड़े मर जाते हैं।

स्वेदरस

यह पैर का रोग है। इस रोग से हाथी लँगड़ाने लगता है और चलने-फिरने में अशक्त हो जाता है। स्वेदरस की तरह पैरों में और भी कई रोग होते हैं। जैसे धनरस, ज्वररस और विस्तिरस इत्यादि। धनरस में हाथी के पैर की पींडुरी सूख जाती है। वह ज़मीन पर बहुत ही सँभल-सँभलकर अपना पैर रखता है। ज्वररस में हाथी के पैर से खून और पानी बहने लगता है। विस्तिरस में हाथी के पैर की नसें फूल

आती हैं। यह बहुत ही कष्टकारक होता है। इसलिये इसकी फ़ौरन् चिकित्सा करनी चाहिए।

चिकित्सा—आध सेर कंजा की गूदी, पाव-भर बारूद, आध सेर समुद्र फल, आध सेर गोखरू, तीन पल कुचला, सोलह पल हल्दी, छ पैसे-भर चूना सीपी, तीन पल कुहरुआ और तीन पाव भाड़ की मिट्टी। पहले कुचला को अधकूट करके सभी दवाइयों को कूट-छान लो, फिर उसमें चौंसठ पल गुड़ मिलाओ और तीन-तीन माशे की गोलियाँ बनाकर प्रतिदिन दोनों वक्त़ हाथी को खिलाओ। सभी प्रकार के रस-रोग अच्छे हो जायँगे।

बकरी के रोग और उनकी चिकित्सा

बकरी भी एक उपयोगी पशु है। इसका दूध स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही अच्छा समझा जाता है। बड़े-बड़े डॉक्टर और वैज्ञानिक बकरी के दूध की अत्यंत प्रशंसा कर चुके हैं। बहुत-से लोग बकरे का मांस खाते हैं। एक दूसरी दृष्टि से भी बकरा अधिक उपयोगी होता है। बकरे के शरीर से एक ऐसी गंध निकलती है, जो घोड़ों के स्वास्थ्य की रक्षा करती है। यदि बकरे का अश्वशाला में बाँध दिया जाय, तो घोड़ों के बीमार होने की आशंका बहुत कम रहती है। श्वास, क्षय और तपेदिक के रोगियों पर भी इसका अधिक प्रभाव पड़ता है।

बकरों से जब हमारा अधिक काम निकलता है, तब हमें उसके स्वास्थ्य की चिंता करनी ही चाहिए। बकरी के स्वास्थ्य की चिंता न करने से उसके बदन में अनेक प्रकार के रोग हो जाया करते हैं। बकरी के शरीर में होनेवाले रोगों की संख्या अधिक है। यहाँ कुछ खास-खास रोगों और उनकी चिकित्सा का वर्णन किया जा रहा है।

पेट फूलना

जब कभी बकरी कोई विदूषित चीज़ खा लेती है, तब उसका पेट फूल आता है। यदि फ़ौरन् उसकी चिकित्सा न की गई, तो वह बहुत ही सख़्त हो जाता है, और बकरी की जान पर आ बीतती है।

चिकित्सा—आध पाव पुराना गुड़, एक छटाक दूब का रस, एक छटाक कच्ची हल्दी का चूरा। इन सभी चीज़ों को कूट-पीसकर आपस में मिलाओ और बकरी को खिलाओ, बहुत फायदा होगा।

दस्त के साथ खून

यह एक बहुत ही भयंकर रोग है। इस रोग से बकरी बहुत ही बेचैन रहती है। वह सदा काँखती और छटपटाती रहती है।

चिकित्सा—एक तोला काली मिर्च का चूर्ण, ढाई तोले सेंधा नमक और ढाई तोले सफ़ेदा। इन सभी चीज़ों को एक में मिलाकर रोगी बकरी को खिलाओ, अवश्य लाभ होगा।

ज्वर

ज्वर होने पर बकरी पागुर करना बंद कर देती है। उसके बदन के रोएँ खड़े हो जाते हैं और नाक तथा मुँह से पानी गिरने लगता है।

चिकित्सा—(१) एक तोला काला जीरा, एक छटाक पुराना गुड़ और चौथाई तोला शोरा। इन सभी चीज़ों को कूटकर एक में मिलाओ और माड़ के साथ गरम-गरम रोगी को पिलाओ, अवश्य लाभ होगा।

(२) एक भाग कपूर, आधा तोला चिरायते का चूर्ण और डेढ़ तोला गिलोय। इन सभी चीज़ों को कूटकर, एक में मिलाकर रोगी को दो, अधिक लाभ होगा।

पेट में दर्द

कभी-कभी बकरी के पेट में भयानक पीड़ा पैदा हो जाती है। पीड़ा पैदा होते ही बकरी सींगोंसे पेट में धक्का मारती है तथा अपनी व्याकुलता प्रकट करती है। वह उठती-बैठती और कभी लोटने लगती है। जब अधिक दर्द होता है, तब यह जोर-जोर से चिल्लाने लगती है।

चिकित्सा—कदम के पत्ते का रस, अजवाइन का अर्क और गुड़। इन चीज़ों को बराबर-बराबर परिमाण में लेकर रोगी को पिलाओ। रोग जाता रहेगा।

वातरोग

इस रोग का हमला जब होता है, तब बकरी चलने-फिरने और उठने-बैठने में बिलकुल असमर्थ हो जाती है। वह लाचार होकर एक जगह पड़ी रहती है।

चिकित्सा—काला नमक, शोरे का चूर्ण, गंधक का चूर्ण और नीम के पत्ते का रस। इन सभी चीज़ों को एक में घोटकर वातवाले स्थान में लगाओ, अवश्य लाभ होगा।

सींग टूटने पर

कभी-कभी बकरी के सींग टूट जाते हैं, और वह अधिक कष्ट पाती है। सींग टूटने पर नीचे लिखी हुई दवा काम में लाई जा सकती है। कपूर के साथ तारपीन का तेल मिलाकर लगाओ। अवश्य लाभ होगा। कोयला पीसकर अंडी के तेल में मिलाओ और उसे ज़ख़्म पर बाँधो। अवश्य लाभ होगा।

खाँसी

खाँसी एक भयानक रोग है। बकरी की खाँसी तो और भी अधिक भयानक समझी जाती है। खाँसी से बकरी को अधिक कष्ट होता है। यदि खाँसी की फ़ौरन् चिकित्सा न की गई, तो अनेक प्रकार के भयानक रोग पैदा होने का डर रहता है।

चिकित्सा—आध छटाक कबाबचीनी, एक अंजुली समुद्र का फेन, एक छटाक धतूरे के पत्ते, आध पाव कंट-कारी के पत्ते और तीन तोले सेंधा नमक। इन सभी

चीज़ों को एक में मिलाकर कूटो-पीसो, और माड़ के साथ दिन में तीन-चार बार गरम-गरम रोगी को पिलाओ। खाँसी जाती रहेगी।

कुत्ते के रोग और उनकी चिकित्सा

कुत्ता एक बहुत ही समझदार प्राणी है। यह आदमियों के संपर्क में अधिक रहता है। इससे मनुष्यों की अधिक सेवा भी होती है। स्वामि-भक्ति का इसमें एक विशेष गुण होता है। यह अपने स्वामी के द्वार पर दिन-रात बैठा रहता और उसके घर की रखवाली करता है। हमारे देश में तो नहीं, पर पश्चिमी देशों में कुत्तों की उपयोगिता अधिक महसूस की जाती है। वहाँ कुत्ते अधिक मूल्य पर बिकते हैं, और उनके पालन-पोषण पर अधिक-से-अधिक रुपया भी खर्च किया जाता है। नवीन सभ्यता की गोद में पले हुए हमारे देश के आदमी भी कुत्ते को अधिक प्यार से पालते हैं। गाँवों के निवासी कुत्ते पर खर्च तो नहीं करते, पर वे उसे पालते अवश्य हैं। वे उसे खाने को देते हैं, और वह उनके द्वार पर बैठा रहता है।

अन्यान्य जानवरों की तरह कुत्ते के शरीर में भी अनेक प्रकार के रोग हुआ करते हैं। यदि कुत्ते के खाने-पीने और रहन-सहन पर ध्यान न दिया गया,

तो वह शीघ्र ही रोगों का शिकार बन जाता है। अँगरेज लोग इसी से अपने कुत्ते का पालन-पोषण बड़े ध्यान से करते हैं। कुत्ता तनिक बीमार हुआ नहीं कि वे झट उसकी चिकित्सा कराते हैं। कुत्ता पालनेवालों को कुत्ते के खास-खास रोगों से अवश्य परिचित होना चाहिए। यदि उन्हें थोड़ा-बहुत ज्ञान रहेगा, तो वे सहज ही में रोगों की परीक्षा करके कुत्ते की चिकित्सा कर या करा सकेंगे। इसी उद्देश्य से यहाँ कुत्ते के कुछ खास-खास रोगों का वर्णन किया जा रहा है।

ज्वर

कुत्ता जब ज्वर से पीड़ित होता है, तब उसकी आँखें लाल और शरीर गर्म हो जाता है। वह चुप-चाप पड़ा रहता है। उसे खाना-पीना बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

चिकित्सा—आधी छटाक मेथी, एक तोला काला-जीरा, पाव तोला कपूर और आधी छटाक अजवाइन। इन सभी चीजों को अधकुचला करके इनका काढ़ा तैयार कर लो। इसी काढ़े को दोनो वक्त एक-एक छटाक की मात्रा में कुत्ते को पिलाओ, ज्वर दूर हो जायगा।

खाँसी

कभी-कभी कुत्ते को खाँसी आने लगती है। उसके नाक और मुँह से पानी गिरने लगता है। खाँसी के आवेग में कभी-कभी वह वमन भी कर दिया करता है।

चिकित्सा--दो तोले सोंठ का चूर्ण, पाँच तोले गंधक का चूर्ण, दस तोले काला नमक और छ तोले गुड़। इन सभी चीजों को गरम जल में धोकर सुखा लो, फिर शहद में चटनी बनाकर कुत्ते को चटाओ। खाँसी जाती रहेगी।

गर्मी

कुत्ते के लिये यह भयानक रोग है। इस रोग से कुत्ते की जिंदगी खराब हो जाती है। यदि जल्द चिकित्सा न की गई, तो उसके प्राणों पर आ बीतती है।

चिकित्सा—गाय का घी चार तोले, सोहागा की लाई और आठ तोले मेथी। इन सभी चीजों का मलहम बनाकर घाव पर लगाओ और घाव को नीम के पानी से धोओ, आराम होगा।

पेचिश

कुत्तों के लिये यह एक भयानक रोग है। इस रोग

से कुत्ते बहुत कम अच्छे होते देखे गए हैं। पेचिश से कुत्ता बहुत परेशान रहता है। वह एक जगह नहीं रहता। बेचैनी से इधर-उधर दौड़ता रहता है।

चिकित्सा—आधा तोला पीपल, आधा तोला गूगुल, आध छटाक तेजपात का चूर्ण और एक छटाक शहद। इन सभी चीज़ों का चूर्ण बनाकर, एक में मिलाकर कुत्ते को चटाओ। अवश्य आराम होगा।

खाज

इस रोग में कार्बोलिक साबुन अथवा नीम के साबुन से प्रतिदिन कुत्ते को नहलाना चाहिए।